कविता / नाजिम हिकमत

(सोशलिस्ट विचारक कार्ल मार्क्स के जन्म दिवस, 5 मई पर)

अगर कोई है
जो कहता है
मुझे
"साफ कमीज का दुश्मन"
तो देखना चाहिए उसे तस्वीर मेरे
महान शिक्षक की,
गुरुओं के गुरु, मार्क्स, गिरवी रखते
थे
अपना जैकेट,
और शायद खाते हों चार दिन में
एक जून;
फिर भी
उनकी खूबसूरत दाढ़ी
झरने की तरह
गिरती थी लहराती हुई
बेदाग, झक्क सफ़ेद
कलफ की हुई कमीज पर...

और किसी इस्त्री किये पैंट को
आज तक फांसी की सजा हुई ?
समझदार लोगों को
यहाँ भी पढ़ना चाहिए अपना
इतिहास-
"1848 में जब गोलियाँ उनकी
जुल्फें संवारती थी,
पहनते थे वे
असली विलायती ऊन का पैंट
बिलकुल अंग्रेजी फैशनवाला,
माड़ी दे कर इश्तरी किया हुआ
हमारे महापुरुष, एंगेल्स...

व्लादिमीर इलिच उल्यानोव लेनिन
जब खड़े हुए
मोर्चे पर किसी आग-बबूला
महामानव की तरह
पहने थे कालरदार कमीज
और साथ में टाई भी....

जहाँ तक मेरी बात है
मैं महज एक सर्वहारा कवि हूँ
-मार्क्सवादी-लेनिनवादी चेतना,
तीस किलो हड्डियाँ,
सात लीटर खून,
दो किलो मीटर शिराएँ और
धमनियाँ,
मांस, मांसपेशियाँ, त्वचा और नसें,
कपड़े की टोपी मेरे सिर की
यह नहीं बताती
कि उसमें क्या खूबी है
मेरे इकलौते फेल्ट हैट से ज्यादा
और इस तरह गुजरता जा रहा है
एक एक दिन...

लेकिन
जब मैं पहनता हूँ हफ्ते में छ दिन
कपड़े की टोपी
तभी जाके हफ्ते में एक दिन
पहन पाता हूँ
अपनी प्रिया के साथ घूमते वक्त
साफ-सुथरा
अपना एकलौता फेल्ट हैट...

सवाल यह है कि
मेरे पास क्यों नहीं हैं दो फेल्ट हैट ?
आपका क्या कहना है उस्ताद ?
क्या मैं काहिल हूँ ?
नहीं!
दिन में बारह घंटे जिल्दसाजी करना,
अपने पैरों पर खड़े-खड़े तबतक
जबतक मैं लुढक के गिर न जाऊं,
मेहनत का काम है.

क्या मैं बिलकुल भोंदू हूँ ?
नहीं!
मसलन,
मैं हो ही नहीं सकता
उतना गया गुजरा
जितना अलाने जी या फलाने जी...

क्या मैं कोई बेवकूफ हूँ ?
ठीक है,
पर पूरी तरह नहीं...
थोड़ा लापरवाह हो सकता हूँ...
लेकिन कुल मिला कर
असली वजह यही है कि
मैं एक सर्वहारा हूँ,
भाई,
एक सर्वहारा!
और मेरे पास भी दो फेल्ट हैट होंगे
-दो क्या दो लाख-
लेकिन तभी जब,
सभी सर्वहाराओं की तरह
मेरा भी मालिकाना होगा-कब्ज़ा
होगा हम सब का-
बार्सिलोना-हाबिक-मोसान-
मैनचेस्टर के कपड़ा मिलों पर
अगर नहीं.....,
तो नहीं!

(अनुवाद -दिगम्बर)

राजा भी मरेगा एक दिन

किसी अनजान सी बीमारी से
या फिर महल की सीढ़ियों से गिरकर
खाते खाते या फिर सोते सोते मामूली जुकाम
या फिर उम्र के बोझ से ही दबकर
अमरत्व की इच्छा लिए
राजा भी मरेगा एक दिन

बदसूरत हेडलाइनों
और रूदालियों के अनमने विलाप में
पहुँचेगी ख़बर
जैसे ओले पहुँचते हैं छतों पर
कौतूहल में निकलेंगे लोग
बच्चे खेलना छोड़ देखेंगे इधर उधर अचरज में
औरतें चौके से बाहर निकल टीवी निहारेंगी थोड़ी देर
मर्द उत्तराधिकारी पर चर्चा करते हुए मनाएँगे छुट्टी

महल के वीरान कक्षों में चलेंगी तलवार सी ज़बानें
उदासी का केंचुल उतार उम्मीदें करेंगी परवाज़
ठीक वैसे ही सड़ेगी राजा की लाश
जैसे मुझ सी परजा की जलेगी आग
धुआँ हो जाएगी देह
अस्थियाँ चटकेंगी
तस्वीरों में मुस्कराता चेहरा सुतली बम की तरह फटेगा
मानव गंध से मचल उठेगा श्मशान का कुत्ता
दक्षिणा बटोरता पंडित घर लौटते ही उतार फेंकेगा गम्भीरता का मुखौटा

हज़ार लाशों का बोझ लिए राजा भी मरेगा एक दिन

-अशोक कुमार पांडेय

बड़े अख़बार का मालिक भी नहीं दिला सका बेड

विजय दर्डा

दिल्ली की हालत बहुत खराब है! बिल्कुल बिहार जैसे हालात हैं। मैं, विजय दर्डा पिछले कुछ दिनों से लगातार कुछ मित्रों के रिश्तेदारों, कुछ जानपहचान के रिश्तेदारों, कुछ न जानने वाले लोगों के फोन के कारण दिल्ली के अस्पतालों में बेड ढूंढने की भागदौड़ में लगा हूं।

लोकमत परिवार के लोगों के माता पिता, सास ससुर और अन्य रिश्तेदारों के लिए मदद ढूंढता रहा हूं। अब तो स्थिति यह आ गई कि लोकमत में मेरे साथ काम करने वाले संजीव कुमार गुप्ता और नितिन अग्रवाल के लिए ऑक्सिजन वाले बेड ढूंढते ढूंढते परेशान हो गया। दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल ने मेरी मदद की।

किसी तरह लोकनायक जयप्रकाश नारायण हॉस्पिटल में एक बेड और एक दूसरे हॉस्पिटल में एक बेड मिला। ज्लेकिन सोमवार की रात को संजीव की हालत खराब होनी शुरू हुई। कुछ देर पहले ही मैंने हमारे नेशनल एडिटर हरीश गुप्ता से पूछा था कि संजीव कैसे हैं ? उन्होंने बताया कि वे स्टेबल हैं। मैंने अपने निजी सहायक प्रवीण भागवत से भी पूछा और उन्होंने भी कहा कि संजीव स्टेबल हैं।

रात करीब 11 बजे अचानक फोन आता है कि उनकी हालत बिगड़ रही है। ऑक्सिजन लेवल 70 आ गया है। फिर मैं दरबदर भटकता रहा। दरवाजे खटखटाता रहा। कोई नही सुन रहा था यानी कोई मेरी मदद नहीं कर पा रहा था। मैंने भोपाल में एक मित्र को फोन किया, मुंबई में मेरे मित्र को फोन किया कि दिल्ली में मुझे एक आईसीयू बेड चाहिए। नागपुर के डॉक्टर

मित्रों को फोन किया कि दिल्ली में आपके मित्र हों तो देखिए। मैंने मुख्यमंत्री जी को रात को फिर फोन किया लेकिन दुर्भाग्यवश उनसे संपर्क नही हो पाया। रात को ही मैंने डॉ. नरेश त्रेहान को नींद में से उठाया। उन्होंने कहा कि आज एक भी बेड उपलब्ध नहीं है। मेदान्ता हॉस्पिटल के बाहर एम्बुलेंस की भीड़ लगी हुई है। मैं सुबह कुछ करता हूँ। मैंने लीगली स्पीकिंग के संपादक तरुण नांगिया को फोन किया और कहा कि आपका न्यायिक क्षेत्र में काफी उठना बैठना है, देखिए कुछ व्यवस्था हो जाए। उन्होंने कोशिश की, कुछ हॉस्पिटल के नाम भी भेजे लेकिन वहां जब मेरे निजी सहायक प्रवीण ने फोन किए तो पता चला कि कोई बेड खाली नहीं है। लिस्ट कोई काम न आया।

एक मित्र ने कोई कपूर हॉस्पिटल की जानकारी दी। वहां बात की तो उन्होंने आश्वासन दिया कि आज रात तो नहीं, कल कुछ कोशिश करते हैं। एक ने कहा कि मैक्स साकेत में कोई पहुंच हो तो कल करवाने का प्रयास करते हैं। मैं टूट चुका था रात में। रात के करीब 2 बजे होंगे तब संजीव के भाई साहब का फोन आया कि कुछ हो रहा है क्या ? मैंने कहा कि मैं प्रयास कर रहा हूं। आशा में बैठा हूं कि कोई फोन करेगा और मुझे ये खबर देगा कि एक बेड खाली है।

मैंने किसकी-किसकी मदद नही ली! धन्यवाद सुरेश प्रभु जी और उनके सुपुत्र अमय का जिन्होंने भरपूर कोशिश की। एक मामले में उन्होंने पहले मदद भी की थी मगर इस मामले में मदद नही हो सकी। इसके पहले जब मैं केजरीवाल जी से बात कर रहा था तो उन्होंने कहा कि सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के बावजूद अबाधित ऑक्सिजन नहीं मिल रही है।

प्रयास कर रहा हूं कि लोगों की ज्यादा से ज्यादा मदद कर सकूं। ज्इन सबके बीच में रात करीब तीन-साढ़े तीन बजे मैसेज आया कि संजीव गुप्ता हमे छोड़कर चले गए। पत्नी और छोटी छोटी बेटियां हैं उनकी। एक बेटी तो अभी फर्स्ट स्टैंडर्ड में पढ़ती है।

कुछ दिन पहले संजीव की आंखों का इलाज चल रहा था, ऑपरेशन भी हुआ था। तब मैंने उनसे कहा था कि संजीव अपना ध्यान रखिए।

विडंबना देखिए कि संजीव हेल्थ बीट ही देखते थे। कुछ दिन पहले ही मेरे कहने पर उन्होंने ऐम्स के निदेशक डॉ. रणदीप सिंह गुलेरिया और नीति आयोग के सदस्य डॉ. विनोद पॉल का साक्षात्कार लिया था जो लोकमत समूह के तीनों अखबारों में छपा था।

संजीव की कमी वाकई कभी पूरी नही हो सकती।

रोहित सरदाना की पत्रकारिता का मूल्यांकन ज़रूरी

नदीम खान

2014 से माहौल बनना शुरू हुआ। शाम को 4 से 6 न्यूज़ एंकर आते और सीधे सीधे मुसलमानों और सरकार के खिलाफ़ बोलने वालों पर माहौल बनाते। कुछ स्पेशल प्रोग्राम होते और सुबह पुलिस उस खिलाफ़ बोलने पर एफआईआर कर देती।

लगातार इन नफ़रत भरे प्रोग्राम का असर ये हुआ कि पूरी हिंदी पट्टी में एक नफरती भीड़ तैयार हुई। जिसको पूरा यक़ीन ये भी था कि जो वो कर रहे है सही कर रहे हैं।

नफ़रत फैलाने वाले इन कार्यक्रमों की कमान रोहित सरदाना (पहले ज़ी न्यूज और बाद में आजतक) और सुधीर चौधरी (ज़ी न्यूज़) के हाथों में थी।

18 मार्च 2016 को लातेहार में 32 साल का मज़लूम और 11 साल का इम्तियाज़ अपने पशु बेचने के लिए बाज़ार निकले। दोनों को भीड़ ने बेरहमी से पीट पीट कर मार दिया और लाश पेड़ से टांग दिया।

इम्तियाज़ का बाप आज़ाद ये देख रहा था। थोड़ा पीछे था लेकिन आवाज़ नहीं निकल सकी। जब वो मुझे उसी पेड़ के पास ये बता रहा था तो उसकी आँखों के आंसू नही रुक रहे थे। मज़लूम के 4 लड़कियाँ और एक लड़का है। सभी की उम्र 14 साल से 4 साल के बीच है।

तब तक वही भीड़ मेरी गाड़ी के पास इकट्ठा होनी शुरू हो गयी और हम किसी तरह वहां से निकले। उस पूरे मामले में दिल्ली के चैनलों ने मरने वालो को ही अपराधी बताया था।

18 मई 2017 को जमशेदपुर में नईम हलीम और सलीम पशु खरीदने निकले। एक खूनी भीड़ ने पीछा शुरू किया। नईम भाग कर एक गाँव मे घुस गया। 10 हज़ार की एक भीड़ जो रोज़ शाम को चैनल देख कर नफरत का टॉनिक लेती है, गाँव मे घुस गई और सलीम को पीट पीट कर मार दिया गया। सलीम और हलीम की लाशें अगले दिन खेत और कुएँ से निकाली गईं।

वही नाटक। मारे गए लोगों को ही प्राइम टाइम मीडिया ने ने अपराधी बता दिया।

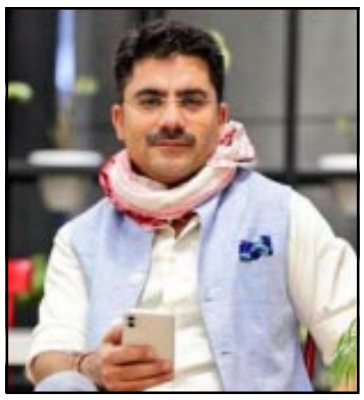

केस ठंडे बस्ते में। नईम की शादी दो साल पहले हुई थी। एक बच्ची है, हलीम के दो लडकियां हैं। 6 और 4 में पढ़ती हैं।

5 सितम्बर 2017 को मैं बैंगलोर में था। गौरी लंकेश से फ़ोन पर बात हुई। साउथ कन्नड़ के कुछ केस के सिलसिले में मिलना था। सुबह नाश्ते पर मिलने की बात हुई। अगले दिन नाश्ते के वक़्त मैं उनकी लाश के साथ था। सोशल मीडिया ने कहा कुतिया मर गयी। रोहित सरदाना और सुधीर चौधरी ने गौरी लंकेश के ख़िलाफ़ ज़हर उगलने वाले नफ़रत फैलाने वाले कार्यक्रम टीवी पर किए।

यूपी में एनकाउंटर की झड़ी लगी। मरने वाले मुसलमान थे या पिछड़े। इसी मंडली ने सबको अपराधी बताया। हम लोगो को अतरौली में इन्ही की तैयार की हुई भीड़ ने घेरा। किसी तरह जान बची।

एनआरसी विरोधी आंदोलन में यूपी में एक दिन में 23 मज़लूमों को मार दिया गया। सरदाना साहब सबको अपराधी बताते रहे। कोई मुकदमा, केस नहीं काम खत्म।

शाहीन बाग़ के खिलाफ माहौल बनाया गया। शारजील इमाम के भाषण की एक लाइन को निशाना बना कर दर्जनों प्रोग्राम किये। कई राज्यो में यूएपीए जैसे काले क़ानून में युवक जेल भेज दिए गए। शारजील इमाम की आज तक ज़मानत नहीं हुई। उमर ख़ालिद के भाषण के एक टुकड़े को आधार बना कर रोहित सरदाना ने प्रोग्राम किये गये। उमर जेल में कोविड में पड़े हैं।

जेएनयू से लापता छात्र नजीब को आज तक सीबीआई या दिल्ली पुलिस ज़न्दा-मुर्दा नहीं बरामद कर सकी। उसके ख़िलाफ़ कोई केस तक दर्ज नहीं लेकिन रोहित सरदाना और सुधीर चौधरी ग़ायब नजीब को आईएसआईएस का आतंकी बताया। जब अदालत ने मीडिया को लताड़ा कि जिसके ख़िलाफ़ कोई केस तक नहीं, उसे आतंकी क्यों कहा जा रहा है तो बाक़ी मीडिया चुप्पी साध गया लेकिन रोहित सरदाना और सुधीर चौधरी फिर भी नहीं माने। लगातार नफ़रत फैलाते रहे।

तबलीग़ जमात के साथ जो तूफ़ान किया गया, जिसके नज़दीक एक दो नहीं सैकड़ों दाढ़ी टोपी वाले मारे गए - पीटे गए। वो कौन भूल सकता है। इसी सरदाना ने फतेह का प्रोग्राम प्रड्यूस किया जिसमें इस्लाम धर्म की जानी मानी महिला हस्तियों की शान में गुस्ताखी क़ी गयी। मुसलमानों को जज़्बात में लाने के सारे प्रोग्राम किये गए।

अगर आपको सरदाना के बच्चे दिखते हैं तो सलीम, नईम, मज़लूम, रकबर और उमर के बच्चे भी दिखने चाहिए।

अगर ये दंगाई लोगों के घर उजाड़ने वाला आपको पत्रकार लगता है तो आप किसी मेंटल हॉस्पिटल में अपना इलाज करवाइए। और ज़्यादा गमगीन है तो फ़ातिमा नफीस से लेकर सलीम की बीवी, मज़लूम की बीवी आज़ाद या कविता लंकेश से बात करके उनके गम पूछ लीजिएगा। या उन 40 लोगो के घर वालो से भी बात कर लीजिएगा। जिन्होंने अपने लोगो को दिल्ली दंगे में खोया और उनके ही लोगों को उसका ज़िम्मेदार बता दिया गया, और इंसाफ को ये प्राइम टाइम वाले कातिल कत्ल कर गए।

सब कुछ आखों देखा और कानों सुना है। आज भी सब परिवार टच में हैं। इसलिए किसी कातिल को महान और खूनी को पत्रकार नही मान सकता। आप मानते रहिये।

(लेखक यूनाइटेड अगेंस्ट हेट एनजीओ से जुड़े हैं)